Carpenter's monthly newspaper

www.carpentersnews.com

कारपेंटर्स न्यूज

R.N.I.No.MAHHIN/2005/16460 | Postel Regd. No. MCW/321/2025-27
Posted at Delisle Road, Mumbai-400013. On 20th of Every month | Published on Every 10 th day of the month

मासिक समाचार पत्र

मुंबई | जुलाई 2026 | वर्ष : 21 | अंक : 08 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 2 रुपए

कारीगर मामलों के लिए पृथक मंत्रालय बनाने की मांग .... पेज - 2

कारीगर मामलों के लिए पृथक मंत्रालय बनाने की मांग

राष्ट्रीय कार्य परिषद ने चार प्रस्ताव पारित किए

नई दिल्ली। देश के 14 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश से आए कारीगर नेताओं, विश्वकर्मा संगठनों, परंपरागत एवं वंशानुगत कारीगर समुदायों के प्रतिनिधियों, सहकारी संस्थाओं, शिक्षाविदों, पूर्व प्रशासनिक अधिकारियों और नीति विशेषज्ञों ने केंद्र सरकार से कारीगर मामलों के लिए पृथक मंत्रालय के गठन की मांग की है। अशोक रोड स्थित तेलंगाना भवन के गुरुजाडा कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित राष्ट्रीय कार्य परिषद की बैठक में परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट ए. पद्मा चारी औसला ने कहा कि कारीगर समुदायों की संस्थागत पहचान, समन्वित विकास और प्रभावी नीति-निर्माण के लिए एक समर्पित मंत्रालय समय की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि कारीगर समुदाय किसी विशेष अनुदान की अपेक्षा नहीं करता, बल्कि ऐसी जवाबदेह व्यवस्था चाहता है, जो उसकी समस्याओं और आवश्यकताओं का समग्र समाधान कर सके। राष्ट्रीय प्रमुख सलाहकार डॉ. वी. विश्वनाथन आचार्य ने कहा कि भारत के कारीगर देश की उत्पादक शक्ति हैं। वर्तमान में कारीगरों से जुड़ी योजनाएं विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में बिखरी हुई हैं, जिससे समन्वय का अभाव है।

उनके अनुसार, पृथक मंत्रालय बनने से योजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन और कारीगरों के समग्र विकास को गति मिलेगी। राष्ट्रीय सचिव प्रो. सागर झिलपे ने बताया कि परिषद वर्ष 2026-29 के राष्ट्रीय रोडमैप और 100-दिवसीय कार्ययोजना पर कार्य कर रही है। राज्य स्तर पर नेतृत्व का गठन किया जा चुका है, जिला स्तरीय संगठन विस्तार जारी है तथा राष्ट्रीय सहभागिता डेटाबेस तैयार किया जा रहा है।

बैठक में बताया गया कि वर्तमान में कारीगरों से संबंधित योजनाएं सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम, वस्त्र, ग्रामीण विकास, कौशल विकास एवं उद्यमिता, जनजातीय कार्य, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता, संस्कृति, पर्यटन तथा वाणिज्य एवं उद्योग सहित विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों के माध्यम से संचालित होती हैं। ऐसे में कारीगरों के समग्र विकास के लिए एक समर्पित मंत्रालय की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

सम्मेलन के समापन पर चार प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए गए। इनमें कारीगर मामलों के लिए पृथक मंत्रालय की स्थापना की अनुशंसा, राष्ट्रीय कार्य परिषद के संगठनात्मक विस्तार एवं राष्ट्रीय तथा राज्य स्तरीय नेतृत्व की पुष्टि, राष्ट्रीय महिला कारीगर सशक्तिकरण प्रकोष्ठ का गठन तथा राष्ट्रीय, राज्य, जिला, नगर और ग्राम स्तर तक छह माह की अंतरिम संगठनात्मक संरचना को स्वीकृति प्रदान करना शामिल है।

सम्मेलन में केरल, पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, पुदुचेरी, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, बिहार, हरियाणा और दिल्ली के राज्य अध्यक्षों की पुष्टि की गई। साथ ही अन्य राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में शीघ्र संगठनात्मक नेतृत्व नियुक्त करने का निर्णय लिया गया।

बैठक में सांसद रामचंद्र जांगड़ा सहित दिनेश कुमार वत्स विश्वकर्मा (दिल्ली), मधु विश्वनाथन (छत्तीसगढ़), नमिता ताम्रकर (दिल्ली), घनश्याम पवार विश्वकर्मा (जोबट, मध्य प्रदेश), बालासाहेब सदाशिव सुतार (महाराष्ट्र), रामगोपाल धीमान (हिमाचल प्रदेश), महेंद्र प्रजापति (मेवाड़, जोधपुर), विशाल विश्वकर्मा (तेलंगाना), सरदार जगजीत सिंह सग्गू (पंजाब), डॉ. सत्यनारायण कोठे (महाराष्ट्र), सी. आर. विश्वकर्मा (भोपाल), ओमपाल पांचाल (सहारनपुर, उत्तर प्रदेश), उषा विश्वकर्मा (रेड ब्रिगेड, उत्तर प्रदेश), सीमा शर्मा जांगिड़ (दिल्ली), अम्बु राजा (अधिवक्ता, दिल्ली), त्रिलोकीनाथ (फरुर्खाबाद, उत्तर प्रदेश) तथा महेंद्र कुमार राजपूत (दिल्ली) सहित विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

RNI NO. MAHHIN/2005/16460

कारपेंटर्स न्यूज़

कारपेंटर्स न्यूज में विज्ञापन या प्रतियों के लिए 9320566633 पर संपर्क करें।
Email: carpentersnews@gmail.com

मुंबई | जुलाई 2026 | वर्ष : 21 | अंक : 08 | पृष्ठ : 16 | मूल्य : 2 रुपए

यूपी ओबीसी के प्रदेश अध्यक्ष ने पद संभाला

लखनऊ। यूपी भाजपा के पिछड़ा वर्ग मोर्चा के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष प्रकाश पाल ने पदभार ग्रहण किया। प्रकाश ने कार्यकर्ताओं से कहा कि आप सभी के परिश्रम से 2027 में प्रदेश में लगातार तीसरी बार प्रचंड बहुमत के साथ भाजपा की सरकार बनेगी। इस अवसर पर एमएलसी रामचंद्र प्रधान, प्रदेश उपाध्यक्ष विनोद यादव, चिरंजीवी चौरसिया, जय प्रकाश कुशवाहा आदि मौजूद रहे।

लोहार समाज की मांगों पर सरकार ने दिया पॉजिटिव भरोसा

पांच दिवसीय उपोषण में 36 जिलों के आंदोलनकारी शामिल

मुंबई। लोहार समाज की विभिन्न मांगों को लेकर आजाद मैदान में की शुरू की गई पांच दिनों की लगातार भूख हड़ताल सफलतापूर्वक पूरी हो गई। 29 जून से 3 जुलाई 2026 तक लौह क्रांति विचारधारा सामाजिक आंदोलन में राज्य भर के अलग-अलग जिलों, तालुकाओं और गांवों से बड़ी संख्या में लोहार समाज के सामाजिक संगठनों, एसोसिएशन और फाउंडेशन ने हिस्सा लिया। 1 जुलाई को अन्य पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग के सेक्रेटरी ने मंत्रालय में डेलिगेशन से मुलाकात की। इस मौके पर भरोसा दिया गया कि ब्रह्मलीन आचार्य दिव्यानंद जी पुरी जी महाराज इकोनॉमिक डेवलपमेंट कॉरपोरेशन बनाने और सदस्यों की नियुक्ति के बारे में जल्द ही सकारात्मक फैसला लिया जाएगा।

अनशन के तीसरे दिन विधायक अभिजीत पाटिल ने विधान भवन में लोहार समाज की अलग-अलग मांगें विधान भवन में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के समक्ष रखी।

मंत्रियों की मीटिंग, मांगों पर पॉजिटिव रोल

अनशन के चौथे दिन जल संसाधन आपदा प्रबंधन मंत्री गिरीश महाजन और शिक्षा मंत्री दादासाहेब भुसे आजाद मैदान में प्रदर्शनकारियों से बातचीत की। उन्होंने भरोसा दिलाया कि लोहार समाज की विभिन्न मांगों को कैबिनेट के सामने रखी जाएंगी। जल संसाधन मंत्री गिरीश महाजन और शिक्षा मंत्री दादासाहेब भुसे लोहार समुदाय की मांगों को पूरा करने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर मंत्री ने भरोसा दिया कि जल्द ही लोहार समाज के नेताओं के साथ एक डिटेल्ड मीटिंग की जाएगी और सभी मांगों पर सकारात्मक बातचीत की जाएगी। उन्होंने यह भी साफ किया कि अगर उस मीटिंग में कोई संतोषजनक हल नहीं निकला, तो मुख्यमंत्री के साथ मीटिंग करके समाज की मांगों को हल करने की कोशिश की जाएगी।

इस भरोसे के बाद उन्होंने भूख हड़ताल करने वालों से भूख हड़ताल खत्म करने की अपील की। इस अवसर पर मौजूद सभी समुदाय के लोगों ने मंत्री का जोश के साथ स्वागत किया और जय विश्वकर्मा और जय लोहार समाज जैसे नारे लगाए। इस ऐतिहासिक आंदोलन की वजह से लोहार समुदाय की बुलंद आवाज महाराष्ट्र विधानसभा तक पहुंची है और समुदाय के जायज अधिकारों की लड़ाई को एक अहम कामयाबी मिली है। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि महाराष्ट्र के 36 जिलों के लोहार समाज के भाई-बहनों, अलग-अलग संस्थाओं और संगठनों की एकता की वजह से यह आंदोलन सफल रहा।

आंदोलन में हिस्सा लेने वाले मुख्य भूख हड़तालियों में झनेश्वर ठमके, प्रशांत लोहार, दादासाहेब कलसाईत, महेश लोहार, बालाजी लोहार, आप्पा लोहार, अजय लोहार, पद्माकर खंडागले, गणेश भालके, उदय पौमैडकर, युवराज खैरे, सुरेश मांडवगड़े, प्रवीण कातालकर, बाहर सूर्यवंशी, अपर्णा कदम, मीना कदम, पुंडलिक सूर्यवंशी सहित और कई दूसरे पदाधिकारी और कार्यकर्ता शामिल थे। इसके अलावा, लौह क्रांति विचारधारा सामाजिक आंदोलन के संस्थापक संजय कोलंबेकर ने आंदोलन का नेतृत्व किया।

लोहार समाज की प्रमुख मांगें

लोहार समाज के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिये 500 करोड़ रुपये का आर्थिक विकास महामंडल बनाया जाना चाहिए। छत्रपति शिवाजी महाराज के शस्त्र निमार्ता व शस्त्रागार के प्रमुख भीमा लोहार का स्मारक रायगढ़ जिले में बनाया जाना चाहिए। सभी जिलों में महाराष्ट्र शासन कौशल विभाग की ओर से प्रशिक्षण केंद्र बनाया जाना चाहिए। बिहार राज्य में लोहार समाज को अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में आरक्षण मिला है, महाराष्ट्र के लोहार जाति को भी अनुसूचित जनजाति के दायरे में आरक्षण मिलना चाहिए। महाराष्ट्र की पारंपरिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था में आने वाली 12 बलुतेदार जातियों में लोहार समाज की आबादी करीब 15 लाख है। इस समाज की अधिकतर आबादी अब भी सड़कों के किनारे लोहे का औजार बनाकर अपना जीविकोपार्जन करती है।

ओबीसी नेताओं को किया सम्मानित

नागपुर। राष्ट्रीय ओबीसी मुक्ति मोर्चा के 36 वें वर्धापन दिवस के अवसर पर श्री गुरुदेव सेवाश्रम में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष अ.भा. मराठी साहित्य सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष डा. रवींद्र शोभणे ने महात्मा फुले के विचारों पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर पूर्व मंत्री सुनील केदार ने कहा कि राज्य प्रतिगामीत्व की ओर जाने का खतरा बढ़ गया है।

नूतन मालवी ने कहा कि ओबीसी को उनके अधिकारों के लिए संघर्ष करने की बजाय दैववाद की ओर ले जाया जा रहा है। ओबीसी न्याय के लिए लड़ने वाले याचिकाकर्ता वकील व ओबीसी के नेताओं को सत्कार किया जाएगा। मुख्य संयोजक मिलित चौधरी ने कहा कि राष्ट्रीय ओबीसी मुक्ति मोर्चा संगठन के माध्यम से लड़ाई जारी है। इस अवसर पर सत्यशोधक चित्रपट निमार्ता सुनील हेलके का सत्कार किया गया। इसके साथ ही एड. भूपेश पाटिल, एड. अशोक यावले, जेष्ठ ओबीसी सहयोगी अरुण आसटकर, बलुतेदार कारीगर नेता शंकरराव चुरागाले, विमुक्त समाज के नेता नरेंद्र पडाल,चंद्रपुर आदि का सत्कार किया गया।

साइंस प्रश्न-प्रतियोगिता का आयोजन

जम्मू। श्री विश्वकर्मा लाइब्रेरी एंड रिसर्च सेंटर न्यू प्लॉट्स, जम्मू में एक साइंस क्विज प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें 5 टीमों ने भाग लिया। लाइब्रेरी के संयोजक रमेश अंगोत्रा की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में विश्वकर्मा सभा जम्मू कश्मीर के अध्यक्ष आर के चालोत्रा और डिगियाना यूनिट से राम पाल चरगोत्रा बतौर अतिथि उपस्थित थे।

भाग लेने वाले छात्रों को नोटबुक भी बांटी गईं। क्विज का मटीरियल बलवंत कटारिया ने तैयार और प्रस्तुत किया था, जिन्होंने हर टीम से कुल 12 सवाल पूछे। मानशु कटारिया और साक्षी वर्मा की टीम-ए पहले स्थान पर रही और उन्हें रुपए 1400 रुपए का नकद पुरस्कार दिया गया। अंश कटारिया और माणिक वर्मा की टीम-उ दूसरे स्थान पर रही और उन्हें 800 रुपए का नकद पुरस्कार मिला। वंशिका धीमान और आराध्या भारती की टीम-इ तीसरे स्थान पर रही और उन्हें 600 रुपए का नकद पुरस्कार मिला। बाकी दो टीमों के हर

सदस्य के एक सौ का सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

बलवंत कटारिया ने कहा कि प्रश्न प्रतियोगिता जागरूकता लाने का सबसे दिलचस्प तरीका है। उन्होंने कहा कि तेजी से फैल रहे अंधविश्वास को रोकने के लिए साइंस जरूरी है। विज्ञान हकीकत है और धर्म विश्वास है। विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ने वाले सभी देश दुनिया पर राज कर रहे हैं। भारत में विज्ञान की कमी थी और इसी वजह से विकास भी पीछे रह गया। कटारिया ने अमेरिका की बढ़त का कारण उसकी एडवांस्ड टेक्नोलॉजी को बताया। उन्होंने कहा कि बाबर जो भारतीय राजाओं को हराने वाला पहला मुगल था, उसने भारतीय धरती पर पहली बार तोप का इस्तेमाल किया और इस तरह भारत का राजा बना। अगर हमारे राजाओं ने विज्ञान को अपनाया होता तो मुगल कभी हमारे शासक नहीं बन पाते। वैज्ञानिक सोच और वैज्ञानिक रिसर्च की कमी के कारण हमें भारी कीमत चुकानी पड़ी। आज भी हमारे नेता वैज्ञानिक सोच के बजाय अंधविश्वास और पाखंड फैलाने में ज्यादा ऊर्जा लगाते हैं। इस अवसर पर राजकुमार चालोत्रा, ऍफ सी सतिया और राम पाल चरगोत्रा ने पुरस्कार बांटे। आयोजन टीम में जोगिंदर अंगोत्रा, ओम प्रकाश कटारिया और दिव्यांश धीमान शामिल थे।

स्वाभिमान, प्रतिज्ञा और मुक्ति: पंडित नेहरू और गाड़िया लोहार

राजस्थान की घुमंतू जनजाति गाड़िया लोहार को उनके अनोखे और कठोर प्रण के लिए जाना जाता है। इस समुदाय का संबंध कभी राजस्थान की शाही भूमि से था। गाड़िया लोहार 16वीं शताब्दी के आसपास चित्तौड़गढ़ के राजा महाराणा प्रताप की सेना में लोहार का काम करते थे। देश की राजधानी दिल्ली में गाड़िया लोहारों की कई बस्तियां हैं। यह कहानी सिर्फ एक प्रधानमंत्री और एक समाज के मिलन की नहीं है, बल्कि सदियों पुराने एक स्वाभिमानी संकल्प के पूरे होने की गाथा है।

चित्तौड़ के किले पर गाड़िया लोहारों के साथ प्रधानमंत्री पं. नेहरु

गाड़िया लोहार मूल रूप से मेवाड़ के राजपूत योद्धा और कुशल लोहार थे, जो महाराणा प्रताप की सेना के लिए बेहतरीन हथियारों का निर्माण करते थे। वर्ष 1568 में जब मुगलों ने चित्तौड़गढ़ के किले पर अधिकार कर लिया, तब इस समाज ने मातृभूमि की पराजय को स्वीकार नहीं किया।उन्होंने किला छोड़ दिया और पांच प्रतिज्ञाएं लीं कि जब तक चित्तौड़गढ़ आजाद नहीं हो जाता, तब तक वे कभी पक्के मकानों में नहीं रहेंगे (तभी से वे गाड़ियों/बैलगाड़ियों पर रहने लगे)। कभी चारपाई पर नहीं सोएंगे। कभी चित्तौड़गढ़ किले पर वापस कदम नहीं रखेंगे। रात के समय घरों या डेरों में दीपक नहीं जलाएंगे। कुएं से पानी खींचने के लिए रस्सी का इस्तेमाल नहीं करेंगे। सदियों तक यह घुमंतू समाज अपनी गाड़ियों पर जीवन बसर करता रहा और अपनी प्रतिज्ञा पर अडिग रहा।

पंडित नेहरू की पहल और ऐतिहासिक दिन (6 अप्रैल 1955)

1947 में देश आजाद हुआ, लेकिन यह समाज अपनी प्रतिज्ञा के कारण अब भी मुख्यधारा से दूर था। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू तक जब यह बात पहुंची, तो वे इस देशभक्त समाज के त्याग से अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने तय किया कि इस समाज को उनका खोया हुआ सम्मान वापस मिलना चाहिए। 6 अप्रैल 1955 को चित्तौड़गढ़ में एक अभूतपूर्व आयोजन किया गया। पंडित नेहरू स्वयं चित्तौड़गढ़ पहुंचे। खुली जीप में अभिवादन करते हुए किले की ओर बढ़ रहे प्रधानमंत्री प. जवाहरलाल नेहरू की एक झलक देखने को लोग बेताब नजर आए। उनके पीछे लाल रंग की पगडियां पहने गाडिया लोहारों का ऐसा सैलाब कि देखकर खुद पंडितजी भी चकित। देशभर से आए इन गाडिया लोहारों के स्वागत में 8 राज्यों के मुख्यमंत्री भी आए। उन्होंने अपना कार्यक्रम तय करने के साथ ही निर्देश दिए कि किले के हर दरवाजे पर एक मुख्यमंत्री अगवानी में खड़े रहे। प. नेहरू ने अपनी बांहों में गाड़िया लोहार समाज के बुजुर्गों और बच्चों को साथ लिया और एक विशाल जुलूस का नेतृत्व करते हुए उन्हें चित्तौड़गढ़ के किले के भीतर ले गए। नेहरू जी के साथ राजस्थान के सीएम मोहनलाल सुखाडिया सहित सभी प्रमुख नेता भी मौजूद रहे।

नेहरू जी ने भारी जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि हमें आजाद हुए सात साल हो गए। एक काम पूरा हुआ और आज हम चित्तौड़ आए। मैं देश में बहुत घूमा हूं, बचपन में चित्तौड़ और मेवाड़ की कहानियां पढ़ता था तो दिल पर उसका बहुत असर पड़ता था। क्योंकि महाराणा ने अपने संदेश में कहा है कि इस पहाड के एक-एक पत्थर और एक एक जर्रे में आजादी की कहानी भरी पड़ी है। लेकिन आश्चर्य की बात है कि मैं अभी तक यहां नहीं आ सका। आज पहली बार आया और ऐसे सुअवसर पर आया कि आप भी पहली बार आए। (नेहरू जी के लंबे भाषण का एक अंश)

नेहरू जी ने की कि अब हमारा देश आजाद है और चित्तौड़गढ़ भी स्वतंत्र है। आपकी प्रतिज्ञा पूरी हुई। उन्होंने प्रतीकात्मक रूप से समाज को उनकी कठिन कसमों से मुक्त किया। नेहरू जी ने उनके ठहरने, शिक्षा और रोजगार के लिए जमीन और सुविधाएं देने का वादा किया ताकि वे भी आधुनिक भारत के विकास का हिस्सा बन सकें। यह घटना भारतीय इतिहास में इसलिए अमर है क्योंकि इसने यह साबित किया कि आजादी सिर्फ कागजों पर या सत्ता के हस्तांतरण का नाम नहीं है। आजादी तब पूरी होती है जब देश का सबसे आखिरी और शोषित समाज भी खुद को स्वतंत्र महसूस करे। नेहरू जी और लोहार समाज का यह मिलन राष्ट्र निर्माण और सामाजिक समावेश का एक अनुपम उदाहरण है।

चित्तौड़गढ़ तब एक छोटे से कस्बे के रूप में परकोटे में था। रात में स्ट्रीट लाइट की जगह केरोसिन के बड़े दीपक जलते थे। वर्ष 1955 में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के आगमन की तैयारी में कस्बे में सड़कें बनी और कोयले से बनने वाली बिजली का शुभारंभ हुआ। नेहरूजी एक छोटे हवाई जहाज से आए। इसके लिए शहर से थोड़ा दूर भंडारिया व सेंती के बीच एक अस्थाई हवाई पट्टी बनाई गई।

विश्वकर्मा कामगार अवॉर्ड की घोषणा

मुंबई। महाराष्ट्र लेबर वेलफेयर बोर्ड ने कामगारों की मेहनत को सम्मानित करने के लिए कामगार भूषण अवॉर्ड और विश्वकर्मा गुणवंत कामगार अवॉर्ड 2024 के विजेताओं के नाम की घोषणा कर दी है। इसमें कोल्हापुर के हुपरी-यळगुड में कल्लप्पा अन्ना अवारे जवाहर शेतकरी सहकारी शुगर फैक्ट्री में टर्नर के तौर पर काम करने वाले सरजेराव अरविंद हल्दकर को कामगार भूषण अवार्ड के लिए चुना गया है। साथ ही, विश्वकर्मा गुणवंत कामगार अवॉर्ड के लिए 51 लोगों को चुना गया है। महाराष्ट्र लेबर वेलफेयर फंड एक्ट, 1953 के तहत, विश्वकर्मा गुणवंत कामगार अवॉर्ड (जिसे पहले गुणवंत कामगार कल्याण अवार्ड के नाम से जाना जाता था) उन वर्कर्स और एम्प्लॉइज को दिया जाता है, जो बोर्ड के साथ लेबर वेलफेयर फंड में योगदान देते हैं। इसके तहत लिटरेचर, सोशल, एजुकेशनल, स्पोर्ट्स समेत अन्य फील्ड में खास योगदान देने वालों को सम्मानित किया जाता है। 10 सालों तक अलग-अलग फील्ड में योगदान देने वाले वर्कर को कामगार भूषण अवॉर्ड दिया जाता है। विश्वकर्मा गुणवंत कामगार अवॉर्ड के लिए प्रत्येक को 25000 हजार रुपए, मेमेंटो व सर्टिफिकेट ऑफ एप्रिसिएशन दिया जाता है और कामगार भूषण अवॉर्ड के लिए 50 हजार रुपये, मेमेंटो और सर्टिफिकेट ऑफ एप्रिसिएशन दिया जाता है।

पीडीपी नेता से मिला ओबीसी फेडरेशन

जम्मू। आल इंडिया ओबीसी फेडरेशन का एक शिष्टमंडल पीडीपी पार्टी के नेता रोहित गुप्ता से उनके निवास पर मिलकर ओबीसी वर्ग के गंभीर मुद्दों पर एक ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन में केंद्रीय ओबीसी सूची में चार जातियों के साथ रूरल टैग हटाने, ओबीसी सर्टिफिकेट बनाने के लिए इनकम सर्टिफिकेट लगाने की फारमेल्टी हटाने, जम्मू कश्मीर सर्विस सिलेक्शन बोर्ड तथा पब्लिक सर्विस में ओबीसी मेंबर रखने, जम्मू की सेंट्रल यूनिवर्सिटी में डोगरी विभाग जल्द चालू करने और जनगणना में ओबीसी का कॉलम रखने की मांग की गई। रोहित गुप्ता ने सभी मांगों को जायज ठहराते हुए कहा कि इस मसले को असेम्बली में उठाएंगे। शिष्टमंडल में जोगिंदर अंगोत्रा, राज चलोत्रा, केबल फोत्रा और बलवंत कटारिया शामिल थे।

बलरामपुर में विश्वकर्मा शिल्पकार पीडीए सम्मेलन आयोजित

बलरामपुर। विधानसभा क्षेत्र बलरामपुर के भीखपुर गांव और उतरौला स्थित व्हाइट हाउस में विश्वकर्मा शिल्पकार पीडीए सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव एवं पूर्व मंत्री रामआसरे विश्वकर्मा मुख्य अतिथि रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता माणिकलाल कश्यप ने की।

रामआसरे विश्वकर्मा ने अपने संबोधन में भाजपा सरकार पर महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और कानून-व्यवस्था को लेकर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि उनके अनुसार शासनकाल में पिछड़े, दलित, अल्पसंख्यक, किसान, मजदूर और नौजवान वर्ग सबसे अधिक प्रभावित हुए हैं। उन्होंने पुलिस कार्रवाई, हिरासत में मौतों और विश्वकर्मा समाज से जुड़ी घटनाओं का भी उल्लेख किया। साथ ही उन्होंने कार्यकताओं से समाजवादी पार्टी की नीतियों को घर-घर तक पहुंचाने और आगामी विधानसभा चुनाव में पार्टी को मजबूत करने की अपील की।

सम्मेलन को सांसद राम शिरोमणि वर्मा, उमाशंकर विश्वकर्मा, शिव अखिलेश विश्वकर्मा, किसान नेता बृजेश सहित कई नेताओं ने भी संबोधित किया।

NIKHIL
ADHESIVES LTD.
Mahacol®
SINCE 1971
गुरु ज्ञान से जोड़ते हैं, हम मज़बूत बंधन से।
आप सभी को गुरु पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएँ।
SUPER HEATFIT
MICA SPECIAL
PV STICK
MAHAQUICK
N3 ULTRA
MP
German Technology

अज्ञान के तिमिर को हरती, मानवता को गढ़ती गुरु-शिष्य परंपरा

भारतीय उपमहाद्वीप की गोद में जन्मी सनातन संस्कृति ने दुनिया को कई अनूठे उपहार दिए हैं, लेकिन इनमें सबसे अनमोल और जीवंत उपहार है गुरु-शिष्य परंपरा। आषाढ़ मास की शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला गुरु पूर्णिमा का पर्व केवल एक धार्मिक कर्मकांड नहीं है, बल्कि यह भारत के उस बौद्धिक और आध्यात्मिक वैभव का उत्सव है, जिसने सदियों से वैश्विक चेतना का नेतृत्व किया है। आज जब दुनिया तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भौतिकता के चरम पर है, तब इस पावन पर्व की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। यह दिन हमें रुककर यह सोचने का अवसर देता है कि सूचनाओं के इस महासागर में हमें ज्ञान और विवेक की राह कौन दिखाएगा। शब्द का मर्म: गु से रु तक की यात्रा संस्कृत वास्तुकला में गुरु शब्द की व्याख्या बेहद वैज्ञानिक और दार्शनिक है। शास्त्रों में स्पष्ट कहा गया है—गुकारस्त्वन्धकारस्तु रुकारस्तन्निरोधकृत्म। अर्थात, गु का अर्थ है अंधकार या अज्ञान, और रु का अर्थ है उसे नष्ट करने वाला प्रकाश। इस प्रकार, गुरु कोई व्यक्ति मात्र नहीं है, बल्कि वह एक शाश्वत ऊर्जा है, एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य को पाशविक प्रवृत्तियों से मुक्त कर देवत्व की ओर ले जाती है। गुरु केवल सूचनाएं नहीं देता, वह शिष्य का रूपांतरण करता है।

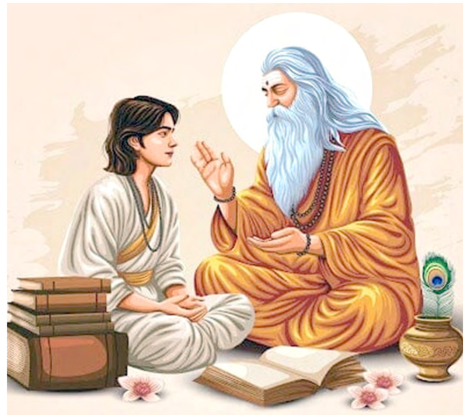

महर्षि वेदव्यासः

आदिगुरु और ज्ञान के महासागर

इस पावन तिथि को व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है। द्वापर युग में इसी दिन महाभारत, अठारह पुराणों के रचयिता और वेदों का वर्गीकरण करने वाले महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास जी का अवतरण हुआ था। व्यास जी ने बिखरते हुए ज्ञान को संकलित कर मानव जाति को वेदों के रूप में एक मार्गदर्शिका दी। भारतीय मनीषा मानती है कि संसार में जो कुछ भी श्रेष्ठ ज्ञान उपलब्ध है, वह सब व्यास उच्छिष्टं जगत्सर्वम यानी व्यास जी की लेखनी से ही निकला है। इसलिए, इस दिन सबसे पहले आदिगुरु व्यास की पूजा की जाती है।

विविध संस्कृतियों का संगमः

सर्वसमावेशी पर्व

भारत की खूबसूरती इसकी विविधता में है और गुरु पूर्णिमा इसका सबसे सुंदर उदाहरण है। यह पर्व किसी एक संप्रदाय तक सीमित नहीं है।

बौद्ध धर्म (धर्मचक्र प्रवर्तन)- इसी दिन तथागत गौतम बुद्ध ने बोधगया में ज्ञान प्राप्त करने के बाद सारनाथ में अपने प्रथम पांच शिष्यों को उपदेश दिया था।

जैन धर्म (तृणमयी दीक्षा)- जैन मान्यताओं के अनुसार, चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने इसी दिन इंद्रभूति गौतम को अपना पहला गणधर (शिष्य) बनाया था, जिसके बाद वे स्वयं गुरु कहलाए।

सिख धर्म - सिख संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर के तुल्य है, जहाँ दसों गुरुओं की शिक्षाओं और गुरु ग्रंथ साहिब के प्रति अटूट निष्ठा व्यक्त की जाती है।

इतिहास के झरोखे सेः

अमर गुरु-शिष्य जोड़ियां

भारत का इतिहास ऐसी महान जोड़ियों से भरा पड़ा है, जिन्होंने समय की धारा को बदल दिया।

आरुणि और धौम्य ऋषि- आज्ञाकारिता और गुरु-भक्ति की ऐसी मिसाल, जहाँ गुरु के खेत की मेड़ टूटने पर पानी रोकने के लिए बालक आरुणि स्वयं नाली में लेट गया था।**चंद्रगुप्त और आचार्य चाणक्य**- एक साधारण बालक को अपनी दूरदर्शिता और नीतिशास्त्र के बल पर मगध का सम्राट बनाने वाले चाणक्य ने सिद्ध किया कि गुरु की गोद में प्रलय और निर्माण दोनों पलते हैं।

स्वामी विवेकानंद और रामकृष्ण परमहंस- आधुनिक युग की सबसे तार्किक जोड़ी। एक ऐसा गुरु जिसने नरेंद्र के भीतर छिपे विवेकानंद को जगाया और भारतीय वेदांत का डंका पूरी दुनिया में बजाया।

छत्रपति शिवाजी महाराज और समर्थ रामदास - गुरु के मार्गदर्शन में शिवाजी ने न केवल शस्त्र संचालन सीखा, बल्कि राष्ट्रभक्ति और धर्म की रक्षा का संकल्प भी लिया।

गुरु महिमा के अमर सूत्रसंत कबीरदास - गुरु गोविंद दोउ खड़े, काके लागूं पाय। बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय। (ईश्वर से पहले गुरु वंदनीय हैं, क्योंकि उन्होंने ही ईश्वर तक जाने का मार्ग दिखाया)।

उपनिषद वाक्यः गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुदेवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ गुरु ही सृष्टि के उत्पत्तिकर्ता, पालनकर्ता और संहारक हैं।

आज के दौर में हमारे गुरु का दायरा भी विस्तृत हुआ है। प्रथम गुरु माता-पिता जो हमें जीवन की पहली वर्णमाला और नैतिकता सिखाते हैं। शैक्षणिक शिक्षक जो हमें आधुनिक विज्ञान, गणित और जीवन यापन के योग्य बनाते हैं। जो कॉर्पोरेट जगत, खेल या कला के क्षेत्र में हमारी प्रतिभा को तराशते हैं उनके लिए भी यह कृतज्ञता का पर्व है।

गहलोत और पायलट की मुस्कान के पार कांग्रेस का सियासी सच

राजस्थान में कांग्रेसी राजनीति की उड़ान उलझन भरी है। बरसों सत्ता में रहने वाली ताकतवर कांग्रेस राजनीतिक धरातल पर कमजोर लगती है, तो कभी कभार फिर से प्रदेश में सरकार बनाने की हुंकार भरती हुई भी दिखती है। इसलिए अपने नेताओं में तालमेल और मेलजोल भरी मुलाकातों की तस्वीरें उत्साह जगाती हैं, और होठों पर हंसी और चेहरों पर मुस्कान भरी हाथ मिलाते हुए तस्वीरें देखते ही कांग्रेसी चिहुंक उठते हैं। लेकिन राजस्थान की कांग्रेसी राजनीति के सारे सच समझने के लिए तस्वीरों के पार का सच समझने की जरूरत है। राजनीति में तस्वीरें अक्सर वही दिखाई जाती हैं, जिसे दिखाना जरूरी होता है। लेकिन राजनीति की असली कहानी उन तस्वीरों के पार होती है, जहां कैमरे की रोशनी नहीं पहुंचती। राजस्थान कांग्रेस में इन दिनों अशोक गहलोत और सचिन पायलट की मुस्कुराती तस्वीर चर्चा में हैं। राहुल गांधी की कोटा यात्रा के दौरान दोनों नेताओं का आत्मीयता से हाथ मिलाना और चेहरे पर सहज मुस्कान लिए हंसते हुए दिखाई देना कांग्रेस कार्यकताओँ के लिए राहत और उत्साह का कारण बना। लेकिन राजनीति की तस्वीरों में दिखने वाली निकटता और राजनीतिक वास्तविकताओं की दूरी के बीच अक्सर लंबा फासला होता है, और उसी सच को समझने की जरूरत है।

पिछले एक दशक से राजस्थान कांग्रेस दो समानांतर राजनीतिक धाराओं के बीच बह रही है। एक धारा अनुभव, संगठनात्मक कौशल और सत्ता संचालन की कला का प्रतिनिधित्व करती है, जिसका चेहरा अशोक गहलोत हैं। दूसरी धारा महत्वाकांक्षा, नई पीढ़ी की राजनीति और भविष्य के नेतृत्व की आकांक्षा का प्रतीक है, जिसका नेतृत्व सचिन पायलट करते हैं। दोनों कांग्रेस के बड़े नेता हैं, दोनों की अपनी ताकत है, दोनों का अपना जनाधार है और दोनों की राजनीतिक यात्रा का अंतिम पड़ाव सत्ता के शिखर तक पहुंचना ही है। राजनीति में महत्वाकांक्षा कोई दोष नहीं होती। बल्कि यही वह ईंधन है, जिससे राजनीतिक यात्राएं आगे बढ़ती हैं। फर्क केवल इतना होता है कि कोई नेता अपनी महत्वाकांक्षा को कितनी कुशलता से राजनीतिक रणनीति में बदल पाता है। अशोक गहलोत ने अपने 50 साल के लंबे अनुभव से राजनीति की यह ललित कला सिद्ध कर रखी है और सचिन पायलट अभी अपने राजनीतिक भविष्य को उस मुकाम तक पहुंचाने के संघर्ष में हैं, जहां नेतृत्व केवल संभावना नहीं, बल्कि निर्विवाद स्वीकार्यता बन जाए।

राजस्थान कांग्रेस की सबसे बड़ी ताकत भी यही है और विडंबना भी। विडंबना इसलिए कि पार्टी का बड़ा हिस्सा दो खेमों में बंटा दिखाई देता है। ताकत इसलिए कि दोनों नेताओं की सक्रियता ने कांग्रेस को राजनीतिक रूप से जीवंत, जीवित और प्रासंगिक बनाए रखा है। बीजेपी के मजबूत संगठन और सत्ता की निरंतरता के बीच कांग्रेस यदि आज भी मुकाबले की स्थिति में दिखाई देती है, तो उसके पीछे इन दोनों नेताओं की निरंतर राजनीतिक सक्रियता की बड़ी भूमिका है। समस्या वहीं पैदा होती है, जहां व्यक्तिगत राजनीतिक आकांक्षाएं सामूहिक संगठनात्मक लक्ष्यों से बड़ी दिखने लगती हैं। कांग्रेस के सामान्य कार्यकर्ता की पीड़ा भी यही है। वह चाहता है कि गहलोत और पायलट साथ दिखें ही नहीं, साथ चलें भी। क्योंकि उसे मालूम है कि राजस्थान में कांग्रेस का पुनरुत्थान किसी एक नेता की ताकत से संभव नहीं है। इसके लिए दोनों धाराओं का संगम आवश्यक है।

यही कारण है कि जब-जब गहलोत और पायलट की मुलाकात होती है, तो कांग्रेस कार्यकताओँ के बीच उम्मीद का वातावरण बनता है। लेकिन उम्मीद और विश्वास में अंतर होता है। उम्मीद तस्वीरों से पैदा हो जाती है, विश्वास व्यवहार से बनता है। और राजस्थान कांग्रेस अभी उस विश्वास की तलाश में है, जो केवल मंच साझा करने से नहीं, बल्कि राजनीतिक प्राथमिकताओं को साझा करने से पैदा होगा। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा और नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली अपनी-अपनी जिम्मेदारियां निभा रहे हैं और अपने अपने गुट भी बनाने की फिराक में हैं। लेकिन यह भी एक राजनीतिक यथार्थ है कि राजस्थान कांग्रेस की असली धुरी अभी भी गहलोत और पायलट ही हैं। संगठन की कमान किसी के हाथ हो सकती है, लेकिन जनभावनाओं और राजनीतिक विमर्श का केंद्र वही नेता बनते हैं, जिनकी स्वीकार्यता प्रदेशव्यापी होती है। डोटासरा और जूली चाहे कितनी भी कोशिश कर लें, मगर स्वीकार्यता की प्रदेशव्यापी कसौटी पर आज भी कांग्रेस में अशोक गहलोत नंबर वन और पायलट नंबर दो हैं, और डोटासरा - जूली इन दोनों नेताओं का विकल्प नहीं बन सकते।

असल में, राजनीति केवल पद का खेल नहीं है। पद किसी को अधिकार दे सकते हैं, लेकिन प्रभाव नहीं। प्रभाव संघर्ष, स्वीकार्यता और जन विश्वास से पैदा होता है। डोटासरा और जूली पद के नेता हैं, कद के नहीं। मगर, गहलोत और पायलट दोनों ने अलग-अलग रास्तों से यह प्रभाव अर्जित किया है। इसलिए दोनों के बीच की प्रतिस्पर्धा केवल व्यक्तियों की प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि दो राजनीतिक शैलियों, दो पीढ़ियों और दो दृष्टिकोणों की प्रतिस्पर्धा भी है। लेकिन इतिहास गवाह है कि बड़ी राजनीतिक सफलता प्रतिस्पर्धा से नहीं, समन्वय से जन्म लेती हैं। कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती बीजेपी नहीं है। बीजेपी तो उसकी राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी पार्टी है, जिससे कभी भी जीत सकते हैं। लेकिन कांग्रेस की असली चुनौती अपने भीतर वह विश्वास पैदा करना है, जो कार्यकताओं को यह भरोसा दिला सके कि पार्टी का भविष्य व्यक्तिगत समीकरणों का बंधक नहीं बनेगा।

राजस्थान की जनता भी अब केवल राजनीतिक संदेशों से संतुष्ट नहीं होती। वह राजनीतिक व्यवहार को देखती है, नेताओं के संबंधों को परखती है और उनके निर्णयों से निष्कर्ष निकलता है। इसलिए तस्वीरों में मुस्कान जितनी महत्वपूर्ण है, उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण वह राजनीतिक संदेश है, जो उन मुस्कानों के पीछे छिपा होता है। कांग्रेस के लिए आने वाला वक्त बेहद निर्णायक हैं। विधानसभा चुनाव में केवल दो साल बचे हैं। यदि गहलोत का अनुभव और पायलट की ऊर्जा एक ही दिशा में प्रवाहित होती है, तो पार्टी नई राजनीतिक ताकत के रूप में उभर सकती है। लेकिन यदि तस्वीरों की मुस्कान केवल अवसरों की औपचारिकता बनी रहीं, तो कार्यकताओं की उम्मीदें फिर निराशा में बदल सकती हैं। आखिरकार राजनीति में हाथ मिलाने से ज्यादा जरूरी दिलों का मिलना होता है। क्योंकि जब दिल मिलते हैं, तब संगठन मजबूत होते हैं। और जब संगठन मजबूत होते हैं, तभी जनता का विश्वास लौटता है। राजस्थान कांग्रेस की असली परीक्षा भी यही है कि वह तस्वीरों की दोस्ती को राजनीतिक एकजुटता में कितना बदल पाती है। बाकी तो खैर, तस्वीरें तो बेचारी कल भी खींचती थीं, आज भी खींच रही हैं और आगे भी खींचती रहेंगी। मगर कांग्रेस का क्या होगा, कांग्रेसियों के लिए यह चिंता का विषय होना चाहिए।

-निरंजन परिहार

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक हैं)

HARRISON®
Glorious 75 Years
Power X
By HARRISON®
Premium
Quality
ट्रस्ट नाम में,
पावर काम में।
कारपेन्टर
सुविधा
स्कीम
जीतो आकर्षक उपहार
टोल फ्री नंबर : 1800-572-5795
भरोसा सुरक्षा का
www.harrisonlocks.com | email : info@harrisonlocks.com
नॉट:- ऊपर दर्शायी गई फोटो सिर्फ उपहार को दर्शाने हेतु है मिलने वाला उपहार इनमे से भिन्न हो सकता है : रंग मॉडल इत्यादि।
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:-
95992 81937

~ घर घर हरीसन
अब हर घर में हरीसन ~

HARRISON | हरीसन

हरीसन कारपेंटर्स महासम्मेलन – हुनर का महोत्सव, सम्मान का उत्सव।

विजेता

हरीसन ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज़ द्वारा आयोजित "हरीसन कारपेंटर्स महासम्मेलन" का भव्य आयोजन संपन्न हुआ, जिसमें सैकड़ों दक्ष कारपेंटर्स ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह कार्यक्रम कारीगरों के समर्पण, मेहनत और उत्कृष्टता को सम्मानित करने हेतु आयोजित किया गया था। आयोजन में हरीसन के वरिष्ठ अधिकारियों ने प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र, उपहार व विशेष सम्मान प्रदान किए। मंच पर

हुनर की पहचान
कारीगरों को सम्मान!

डिज़ाइन innovation, आधुनिक उपकरणों के उपयोग और Quality work पर संवाद हुआ। साथ ही, कंपनी ने अपने आगामी उत्पादों की झलक भी प्रस्तुत की। यह महासम्मेलन हरीसन की उस भावना को दर्शाता है जिसमें वह अपने कारपेंटर्स को केवल भागीदार नहीं, बल्कि अपने परिवार का अहम हिस्सा मानता है। यह आयोजन हर वर्ष नई प्रेरणा लेकर आता है।

हरीसन प्रोडक्ट पॉइंट अर्जित करने का तरीका किया और भी आसान

मात्र क्यू आर कोड को स्कैन करने पर पाएं उपहार

हरीसन का नया QR स्कैनिंग फीचर – कारपेंटर्स के लिए आसान इनाम!

देश के भरोसेमंद ब्रांड हरीसन ने कारपेंटर्स के लिए QR स्कैनिंग फीचर लॉन्च किया है, जिससे उपहार जीतना अब और भी आसान हो गया है।

कारपेंटर्स को हरीसन प्रोडक्ट की पैकिंग में दिए गए QR कोड को स्कैन करना है, और उनके रजिस्टर्ड प्रोफाइल पर पॉइंट्स अपने आप जुड़ जाएंगे। अब प्रोडक्ट की कट्टिंग संभालने की जरूरत नहीं, बस स्कैन करें और इनाम पाएं।

यह पहल कारपेंटर्स की सहूलियत और प्रोत्साहन के लिए की गई है। हरीसन हमेशा अपने कारीगरों के साथ खड़ा है!

उपहार जीतने की प्रक्रिया

स्टेप 1 — मोबाइल मे हरीसन सुविधा एप्लीकेशन डाउनलोड करे, और अपनी ID बनाकर लॉगिन करे।

स्टेप 2 — प्रोडक्ट पैक के अंदर लगे QR CODE को सुविधा एप्लीकेशन मे स्कैन करे और MRP के बराबर पॉइंट इकट्ठा करे।

स्टेप 3 — दिये गये 6 उपहार के आधार पर अपने पॉइंट REDEEM करे, और उपहार जीते

Suvidha
iSoftCare Technology

प्ले स्टोर पर (HARRISON SUVIDHA APP) सर्च कर के हरीसन लोगो एप्लीकेशन अपने फ़ोन मे इनस्टॉल करे।

#harrison_carpentermeet

Find Us On : | Toll Free No. 1800-572-5795

Advt

हम सभी एक ही सर्वशक्तिमान की संतान हैं : स्वामी हरि चैतन्य पुरी

मुंबई। प्रेमावतार, युगदृष्टा, श्री हरि कृपा पीठाधीश्वर व विश्व विख्यात संत स्वामी श्री हरि चैतन्य पुरी जी महाराज ने चेम्बूर स्थित तिलक नगर में उपस्थित विशाल भक्त समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि परमात्मा एक ही है। उनके नाम उपासना पद्धतियां विभिन्न हो सकती हैं। हम सभी एक ही सर्वशक्तिमान की संतान हैं जो जीव मात्र का परम सुहृदय हितैषी है। परमात्मा किसी से भी दूर नहीं है, लेकिन स्वार्थ के दलदल में फंसे इंसान की गति ऐसी है कि वह अपने भीतर स्थित परमात्मा को नहीं पहचान पा रहा है। सत्य को पहचानना, धर्म को पहचानना, दया को अपनाना, शांति मार्ग का चयन करना व क्षमादान में निपुणता ही परमात्मा का सत्य रूप है। सच्चा सुख आनंद व शांति एकमात्र परमात्मा व अध्यात्म की शरण में ही है। परमात्मा से प्रेम, समाज की सेवा व स्वयं की खोज करें। जो प्रभु समर्पित होकर अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं, उनकी हर प्रकार से देखभाल व रक्षा स्वयं प्रभु करते हैं। लौकिक उन्नति बुरी नहीं, लेकिन प्रभु से विमुख उन्नति अवनति के समान ही है।

उन्होंने कहा कि मत,पंथ व संप्रदाय विभिन्न हो सकते हैं लेकिन धर्म एक ही है जो हमें राष्ट्रीयता, नैतिकता, मानवता व पारस्परिक सौहार्द का संदेश देता है। जो आपस में लड़ना सिखाएं या हिंसा का संदेश दे वो धर्म नहीं हो सकता। धर्म जोड़ता है तोड़ता नहीं। लेकिन दुर्भाग्यवश आज लोग धर्म के नाम पर तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं, व तोड़ रहे हैं वह शर्मनाक है। धर्म विज्ञान सम्मत है ढकोसला नहीं। धर्म व विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं कहना भी अतिश्योक्ति नहीं। धर्म से विज्ञान दूर होने पर ही ढोंग,पाखंड,अंधविश्वास और रूढ़िवादिता को बढ़ावा मिलता है। धर्म विहीन विज्ञान भी विकास का नहीं विनाश का कारण बनेगा। आज धर्म के अनुष्ठान बहुत बढ़ रहे हैं लेकिन आचरण अपेक्षाकृत उतना नहीं बढ़ रहा, जबकि धर्म मात्र अनुष्ठान का नहीं अपितु आचरण का विषय है। जीवन का अभिन्न अंग बन जाए धर्म, हर क्रियाकलाप में जुड़ जाए धर्म तो समाज में व्याप्त बुराइयां, विकृतियाँ व विकार हमारे जीवन में प्रवेश नहीं कर पाएंगे ।

उन्होंने कहा कि प्यार बहुत ही छोटा सा शब्द है अगर सच्चा हो तो सारी दुनिया का मालिक भी उसके वश में हो जाए तो कोई बड़ी बात नहीं। प्रेम ही ईश्वर है, ईश्वर ही प्रेम है। बशर्ते वह प्रेम विशुद्ध हो, निष्काम हो, निस्वार्थ हो, निष्कपट हो। ऐसा विशुद्ध, निस्वार्थ, निष्कपट प्रेम परमात्मा का ही स्वरूप है जब यह स्वाभाविक हमारे मन में उत्पन्न हो तो लगता है कि सामने वाला कौन है, कही ये साक्षात परमात्मा तो नहीं है। लेकिन स्थिर नहीं रहती है बुद्धि, प्रेम, आस्था विश्वास। ये परमात्मा नहीं है तो परमात्मा का कोई निकट जन है ये सदियों से लगता आया है क्योंकि अंत में स्वाभाविक प्रेम परमात्मा या परमात्मा के निज जन के प्रति ही उत्पन्न हो सकता है। परंतु आज दुर्भाग्यवश इसी प्रेम का अभाव सर्वत्र दिखाई देता है आज मूर्खता वश लोग वासनामय संबंधों को प्रेम कह देते हैं जो कि प्रेम का भी अपमान है।

अपने धारा प्रवाह प्रवचनों से उन्होंने सभी को मंत्रमुग्ध व भावविभोर कर दिया। सारा वातावरण भक्तिमय हो उठा व श्री गुरु महाराज, कामां के कन्हैया व लाठी वाले भैया की जय जयकार से गूंज उठा।

काल भैरव दर्शन की व्यवस्था बदल सकती है

उज्जैन। श्रावण महीने की शुरूआत से काल भैरव मंदिर में दर्शन व्यवस्था बदल सकती है। श्रद्धालुओं की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए मंदिर प्रबंध समिति अभी से तैयारी कर रही है।

कुछ दिनों पहले ही मंदिर में 500 रुपए सशुल्क वीआईपी दर्शन की व्यवस्था भी शुरू की गई है। ऐसे में अभी मंदिर में नि:शुल्क सामान्य सशुल्क दर्शनार्थियों के लिए अलग-अलग दो कतार लगाई जा रही हैं। इनमें से सशुल्क दर्शन वाली कतार में ही प्रोटोकॉल व वीआईपी वाले श्रद्धालुओं को भी दर्शन करवाए जा रहे हैं। इससे सुविधा बनाने में मुश्किलें हो रही हैं। श्रद्धालुओं की भीड़ अधिक होने से प्रबंधन गड़बड़ा रहा है। अगले महीने 30 जुलाई से सावन महीना शुरू हो रहा है, जिसकी तैयारी चल रही है।

शिक्षा के साथ बच्चों को संस्कार देना भी जरुरी

मुंबई। शांता सिद्धि चैरिटेबल ट्रस्ट, हिन्दू कॉलोनी, दादर की ओर से लोनावला नगर परिषद के लोकमान्य तिलक विद्यालय नांगरगांव में सभी छात्रों को स्कूल बैग, नोटबुक, रेनकोट, पानी की बोतल, टिफिन बॉक्स, कंपास बॉक्स और स्कूल के लिए टेलीविजन प्रदान किया गया। संस्था की ओर से बच्चों के लिए यह उपक्रम कई वर्षों से चलाया जा रहा है।

शांता सिद्धि चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष व लीलावती अस्पताल के वरिष्ठ न्यूरो सर्जन डा.पी.एस.रमानी ने शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए समाज को जागरूक करने पर बल देते हुए कहा कि आज के समय में बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना जरूरी है। संस्कार देना भी उतना ही जरूरी है। शांता सिद्धि चैरिटेबल ट्रस्ट के सचिव भूषण जैक ने कहा कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए ऐसी पहल समाज के लिए लाभकारी है। यह समाज में सकारात्मक बदलाव की मजबूत आधारशिला रख रही है। प्रिंसिपल येओल ने कहा कि संस्था के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि शांता सिद्धि चैरिटेबल ट्रस्ट इस दिशा में अनुकरणीय काम कर रही है। इस अवसर पर नगर निगम पार्षद सुभाष डेनकर और वसुंधरा दुर्गे ने भी अपनी बातें रखी।

नीम करोली बाबा की सीख बदल देगी जिंदगी

नीम करोली बाबा सादगी और भक्ति के प्रतीक थे। उनका मानना था कि सुख-समृद्धि पाने के लिए किसी कठिन अनुष्ठान की जरूरत नहीं है, बस कुछ छोटी बातों को जीवन में उतारना काफी है। बाबा हनुमान जी के परम भक्त थे। उनका कहना था कि हनुमान चालीसा की हर पंक्ति एक मंत्र की तरह है। जो व्यक्ति रोजाना पूरी श्रद्धा के साथ सुबह-शाम हनुमान चालीसा पढ़ता है, उसके जीवन की सभी बाधाएं दूर होती हैं। जीवन में एक गुरु का होना बहुत जरूरी है। उनके अनुसार, जिसने गुरु चुन लिया, उसे उनके सानिध्य में रहते हुए उनके बताए मार्ग पर चलना चाहिए। गुरु का आशीर्वाद ही सबसे बड़ी पूंजी है, जो इंसान को सही दिशा दिखा कर उसे भटकने नहीं देता।

जीवन है तो उतार-चढ़ाव तो आएंगे ही। बाबा सिखाते थे कि कठिन समय में घबराना नहीं चाहिए। हर अंधेरी रात के बाद सवेरा जरूर होता है। यदि आप अपनी ईश्वर/शक्ति पर पूरा भरोसा रखेंगे, तो बड़ी से बड़ी मुश्किल भी आसान हो जाएगी। असली अमीर वह नहीं है जिसके पास बहुत पैसा है, बल्कि वह है जो धन को सही जगह खर्च करता है। नीम करोली बाबा कहते थे कि अपने धन का कुछ हिस्सा जरूरतमंदों की सेवा और परोपकार में लगाना चाहिए। जो पैसा दूसरों की भलाई में काम आता है, वह कभी कम नहीं होता, बल्कि बरकत लेकर आता है।

खीर भवानी मेले में उमड़ पड़े श्रद्धालु

जम्मू-कश्मीर। जम्मू- कश्मीर भाजपा ने कहा कि गांदरबल जिले में आयोजित वार्षिक खीर भवानी मेले में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की मौजूदगी इस बात का प्रमाण है कि केंद्र शासित प्रदेश, विशेषकर कश्मीर घाटी में शांति और सामान्य स्थिति का माहौल है। गांदरबल जिले के तुलमुल्ला स्थित राज्य देवी मंदिर में आयोजित खीर भवानी मेले में देश के विभिन्न हिस्सों से आए सैकड़ों कश्मीरी पंडित श्रद्धालुओं ने भाग लिया और पूजा-अर्चना की।

फायदों के साथ जोड़ो
EURO 7000 Wood Adhesive
OFFER STARTS FROM 8TH JUNE 2026
140 पॉइंट्स
में अब डबल रिवॉर्ड्स
Euro 7000 Digital App में 140 पॉइंट्स
रिडीम करके पाएं दोगुने फायदे
नॉइज़ ईयरबड्स
वर्थ ₹2,999
+
स्विस मिलिट्री ब्लूटूथ स्पीकर
वर्थ ₹4,990
आज ही "Euro 7000 Digital"
ऐप डाउनलोड करें
Google Play
App Store
TERMS & CONDITIONS
• इस Offer का लाभ उठाने के लिए "EURO7000 DIGITAL" Application Download करें और Points Scan करें।
• यह ऑफर Limited Time के लिए है।
• कंपनी इस स्कीम को कभी भी बदलने या बंद करने का अधिकार रखती है।
www.euroadhesives.com

रामायण भारत की सबसे महंगी फिल्म

रणबीर कपूर और साई पल्लवी की मल्टीस्टारर फिल्म रामायण चर्चा में है। हर दिन के गुजरने के साथ ही इसके पहले पार्ट की रिलीज डेट नजदीक आ रही है। रामायण पार्ट 1 इस साल दिवाली पर और पार्ट 2 अगले साल यानी 2027 की दिवाली पर रिलीज होनी है। फिल्म के मेकर्स बड़े पैमाने पर रिलीज करने जा रहे हैं। ओवरसीज में इसे वॉर्नर ब्रदर्स पिक्चर्स डिस्ट्रिब्यूट करेगा, वहीं घरेलू बाजार यानी भारत में इसके डिस्ट्रीब्यूशन राइट्स करण जौहर की धर्मा प्रोडक्शन ने ले लिए हैं।

रामायण के प्रोड्यूसर नमित मल्होत्रा ने फिल्म का 30 मिनट का एडिटेड फुटेज कई स्टूडियोज को दिखाया था। 30 मिनट के विजुअल ने ही धर्मा प्रोडक्शंस को इम्प्रेस कर दिया, जिससे आगे की बातचीत के लिए रास्ता खुल गया। धर्मा के फिल्म से जुड़ने से उम्मीद की जा रही है कि ये भारत में अब सबसे ज्यादा स्क्रीन पर रिलीज होने वाली फिल्म बन सकती है। रामायण का निर्देशन नितेश तिवारी कर रहे हैं। नितेश आमिर खान की दंगल और सुशांत सिंह राजपूत की छिछोरे जैसी फिल्मों के लिए जाने जाते हैं। दो पार्ट में बन रही रामायण में रणबीर कपूर भगवान राम, सई पल्लवी माता सीता, यश रावण, रवि दुबे लक्ष्मण और सनी देओल हनुमान के रोल में नजर आने वाले हैं। इनके अलावा कैकेयी के रोल में लारा दत्ता, सूर्पनखा के किरदार में रकुल प्रीत सिंह, राजा दशरथ के किरदार में अरुण गोविल, रानी कौशल्या के रूप में इंदिरा कृष्णन, मंथरा के रोल में शीबा चड्ढा, भरत के रोल में आदिनाथ कोठारे और भगवान इंद्र के रोल में कुणाल कपूर जैसे कलाकार दिखाई देंगे। रामायण को भारत की सबसे महंगी फिल्म बताया जा रहा है। इसके प्रोड्यूसर नमित मल्होत्रा एक इंटरव्यू में बता चुके हैं कि उनकी इस फिल्म का बजट 4000 करोड़ से भी ज्यादा है। ऐसे में ये देश की सबसे महंगी फिल्म होने वाली है। फिल्म में ए आर रहमान बॉलीवुड कंपोजर हैंस जिमर के साथ मिलकर संगीत दे रहे हैं।

शिल्पा बनी गोविंदा की फैन

नेटफ्लिक्स का रियलिटी शो लॉकअप 2 चर्चा में है। पिछले हफ्ते शो से श्रेयस अय्यर की बहन श्रेष्ठा अय्यर बाहर हो गई हैं। जिसके बाद एक नई वाइल्ड कार्ड एंट्री हुई, जो हैं टीवी एक्ट्रेस शिल्पा शिंदे। एक्ट्रेस की एंट्री इतनी धमाकेदार हुई है कि पूरे घर में बवाल मचा हुआ है। हर कोई इस बात को एक्सेप्ट कर चुका है कि शिल्पा शिंदे के साथ चीजें काफी मुश्किल होने वाली है। लेकिन इस कंटेस्टेंट के सामने शिल्पा की भी एक नहीं चली, वह गोविंदा की पत्नी सुनीता आहूजा हैं। जो हाल ही में शो में बुरी तरह रोती दिखीं, उन्होंने होस्ट रितेश देशमुख से कहा कि वह घर जाना चाहती हैं, क्योंकि यहां खाना भी नहीं मिलता। अब सुनीता का एक नया वीडियो वायरल हो गया है, जिसमें वो शिल्पा शिंदे पर भड़कती दिखीं। दरअसल शिल्पा शिंदे ने आते ही गोविंदा को लेकर ही सुनीता आहूजा से बात की थी। जिससे गोविंदा की पत्नी बिल्कुल भी खुश नहीं थी। वह राम कपूर को कहती दिखीं इसको यही सब करने के लिए अंदर भेजा है, ज्यादा करेगी तो सुनेगी मेरी। मैं फिर औकात में आ जाऊंगी। मेरे परिवार की बात मत करो। मेरा पति है 50 से अफेयर करे, तेरे बाप का क्या जा रहा है भाई। इससे पहले भी सुनीता आहूजा की शिल्पा शिंदे से खास बनी नहीं है। शिल्पा शिंदे ने बाकी तीन कंटेस्टेंट्स से लड़कर सुनीता आहूजा को सुरक्षित किया। जबकि गोविंदा की पत्नी ने खुद कहा था कि वह घर जाना चाहती हैं, तो उन्हें कोई भी सेफ न करे। लेकिन फिर भी शिल्पा ने वरुण को रिस्क में डालकर उन्हें सेफ कर दिया है। इससे पहले जब शिल्पा शिंदे की शो में एंट्री हुई, तो वह सुनीता आहूजा पर शादी को लेकर निशाना साधती हुई दिखी थी।

बेटी की शादी में इमोशनल हुए शैलेश लोढ़ा

पॉपुलर शो तारक मेहता का उल्टा चश्मा फेम एक्टर शैलेश लोढ़ा की बेटी स्वरा की शादी हो गई। इस शादी में एक्टर विक्की कौशल भी पहुंचे। वीडियोज में विक्की कौशल शैलेश की पगड़ी ठीक करते दिखे। उन्होंने स्वरा संग भी फोटो क्लिक करवाए और शैलेश के साथ समय बिताया। शादी में विक्की कौशल के अलावा रजा मुराद, राकेश बेदी, सुदेश भोसले नजर आए। इसके अलावा राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, बीजेपी के प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़, योग गुरु बाबा रामदेव जैसे स्टार्स भी पहुंचे। ये शादी बड़ी धूमधाम से हुई। स्वरा ने शादी में व्हाइट कलर का लहंगा पहना। उन्होंने रेड कलर की ज्वैलरी पहनी और बालों को ओपन रखा। स्वरा दुल्हन के जोड़े में बहुत खुश नजर आ रही थी। शैलेश का एक वीडियो सामने आया है। इसमें शैलेश इमोशनल नजर आ रहे हैं। वे बेटी स्वरा की विदाई में इमोशनल नजर आ रहे हैं।

स्वरा के प्री-वेडिंग फंक्शन के वीडियो भी वायरल हैं। शैलेश ने संगीत में पत्नी के साथ जमकर डांस किया। उन्होंने जोरु का गुलाम गाने पर डांस किया। शैलेश का डांस खूब चर्चा में बना है. इसके अलावा उन्होंने सूफी नाइट में गाने भी गाए। शैलेश सिंगिंग से लेकर डांसिंग तक में माहिर हैं। शैलेश की बात करें तो उन्हें शो तारक मेहता का उल्टा चश्मा के लिए जाना जाता है। इस शो में वो तारक मेहता के रोल में थे। शैलेश ने कई सालों तक इस शो में काम किया।

मोनालिसा बनी दुल्हन

भोजपुरी की टॉप हीरोइनों में तो शुमार मोनालिसा टीवी पर भी अपने शानदार अभिनय से एक अलग पहचान बना चुकी हैं।सोशल मीडिया पर वह जबरदस्त फैन फॉलोइंग रखती हैं। एक्ट्रेस ने सोशल मीडिया पर एक तस्वीर शेयर की जिसमें वह लाल जोड़े में दुल्हन बनी हुई हैं, जैसे मानों शादी होने जा रही हो। उनकी ये तस्वीरें बेहद खूबसूरत लग रही हैं। उन्होंने अपनी इस पोस्ट के साथ द दुल्हन करके एक कैप्शन भी दिया है। उनकी ये तस्वीरें देखने के बाद कमेंट बॉक्स में प्रतिक्रियाओं की बौछार हो गई है। कोई दिल ड्रॉप कर रहा है तो किसी ने तारीफों के पुल बांध दिए। एक्ट्रेस ने पूरा रेड आउटफिट कैरी किया है और गोल्डन जड़ाऊ ज्वेलरी कैरी की है। एक्ट्रेस मोनालिसा ने जो तस्वीरें शेयर की हैं वो उनके रील लाइफ कैरेक्टर से जुड़ी हुई हैं यानी उन्होंने ये लाल लिबास किसी रोल के लिए वियर किया है, क्योंकि मोनालिसा ने अपने कैप्शन में लिखा है द दुल्हन, द कैरेक्टर। इन फोटो में वो अलग-अलग पोज में नजर आ रही है।

मोनालिसा कई सीरियल्स में अहम रोल प्ले कर चुकी हैं। नजर में उनका रोल काफी खतरनाक दिखाया गया, दरअसल वो डायन के किरदार में दिखी थीं। इसके अलावा वो बेकाबू, नमक इस्क का, माता की महिमा, शमशान चंपा, जैसे शोज में छाप छोड़ चुकी हैं। इसके अलावा वह हिंदी और साउथ की फिल्मों में भी नजर आ चुकी हैं। मोनालिसा बिग बॉस 10 का हिस्सा रह चुकी हैं और यहीं पर उन्होंने अपने लॉन्ग टर्म बॉयफ्रेंड विक्रांत सिंह राजपूत संग शादी की थी।

आवारापन 2 में दिखेंगे अनिरुद्ध

इमरान हाशमी की फिल्म आवारापन 2 से परेश रावल के बेटे अनिरुद्ध रावल बड़े पर्दे पर डेब्यू करने जा रहे हैं। अनिरुद्ध फिल्म में सिकंदर नाम का अहम किरदार निभाते दिखाई देंगे। अनिरुद्ध इससे पहले नेटफ्लिक्स की सीरीज स्कूप में नजर आए थे। इस सीरीज में उनके काम को काफी सराहना मिली थी। अब करीब 3 साल बाद वो बड़े पर्दे पर कदम रखने वाले हैं। परेश रावल और स्वरूप संपत के बेटे अनिरुद्ध ने फिल्म मेकिंग की कला भी सीखी है। उन्होंने सलमान खान की फिल्म सुल्तान और टाइगर जिंदा है में बतौर असिस्टेंट डायरेक्टर काम किया था और कैमरे के पीछे की बारीकियों से रूबरू हुए। इसके अलावा अनिरुद्ध ने लेजेंड्री एक्टर नसीरुद्दीन शाह के अंडर में अभिनय की ट्रेनिंग भी ली है।

मुकेश भट्ट ने विशेष फिल्म्स के बैनर तले बतौर प्रोड्यूसर जब पहली फिल्म बनाई थी तो उसमें परेश रावल ने भी काम किया था। फिल्म का नाम कब्जा था और ये करीब 38 साल पहले 1988 में आई थी। फिल्म में संजय दत्त, राज बब्बर, आलोक नाथ, अमृता सिंह, अनुपम खेर, डिंपल कपाड़िया और महेश आनंद जैसे कई कलाकार नजर आए थे। अब उसी बैनर के साथ परेश रावल के बेटे अनिरुद्ध अपनी बड़े पर्दे की पारी शुरू कर रहे हैं।

फिल्म का निर्देशन नितिन कक्कड़ ने किया है। फिल्म को लिखा है बिलाल सिद्दीकी ने। इसे मुकेश भट्ट की विशेष फिल्म्स के बैनर तले बनाया गया है। इमरान हाशमी की आवारापन 2 साल 2007 में आई इसी नाम की फिल्म का सीक्वल है। आवारापन उस वक्त सिनेमाघरों में कुछ खास नहीं चल पाई थी, लेकिन बाद में इसे कल्ट फिल्म का दर्जा मिल गया। फिल्म का निर्देशन मोहित सूरी ने किया था और इसमें इमरान के साथ श्रिया सरन, मृणालिनी शर्मा, आशुतोष राणा, शाद रंधावा और आशीष विद्यार्थी जैसे कलाकार दिखाई दिए थे।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक-गंगाराम श्रीराम विश्वकर्मा द्वारा 306, दिघे नगर को आप हाउसिंग सोसायटी, फितवाला रोड, एलफिन्स्टन (वेस्ट), मुंबई-40013 से प्रकाशित एवं एस आर पब्लिकेशन, मोहन अर्जुन कम्पाउंड, गाला नम्बर-8, 9, 10, घर्टनपाढा, वैशाली नगर लास्ट बस स्टॉप, नियर भारत गैस गोडाउन, दहिसर (ईस्ट), मुंबई- 400068 से मुद्रित। संपादक - गंगाराम श्रीराम विश्वकर्मा* RNI NO. MAHHIN/2005/16460 मो. 09320566633. (सभी विवादों का निपटारा न्यायक्षेत्र केवल मुंबई न्यायालय के अधीन होगा. *पी. आर. बी. अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार)

आषाढ़ मास के देवता वामन

श्रावण मास से पहले आने वाले आषाढ़ मास में भगवान हरि (विष्णु) की पूजा की जाती है। इस पवित्र महीने में स्नान, दान, जप और यज्ञ करने का बहुत अधिक महत्व बताया गया है। स्कंद पुराण के अनुसार विष्णु के पांचवें अवतार वामन इस मास के देवता हैं, इसलिए इस मास में वामन अवतार की उपासना विशेष फलदायी होती है। इस माह के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि और प्रत्येक बृहस्पतिवार को भगवान वामन की पूजा और व्रत की परंपरा है। इस मास में खड़ाऊं, छाता और जल दान का विशेष महत्व है। आषाढ़ मास में विवाह, गृह प्रवेश और मुंडन संस्कार जैसे सभी मांगलिक कार्य वर्जित होते हैं। इन्हें करने से शुभ फल की प्राप्ति नहीं होती यानी निष्फल होते हैं, इसलिए इसे शून्य मास भी माना जाता है।

इसका कारण यह है कि आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि (देवशयनी एकादशी) से भगवान विष्णु चार माह के लिए क्षीर सागर में योग निद्रा में चले जाते हैं। इससे सभी शुभ और मांगलिक कार्य रुक जाते हैं। विष्णु के योगनिद्रा में जाने पर शिव सृष्टि के संचालन का भार संभालते हैं। आषाढ़ मास से ही चातुर्मास प्रारंभ होते हैं। चातुर्मास आषाढ़ शुक्ल एकादशी तिथि से प्रारंभ होकर कार्तिक शुक्ल एकादशी तिथि तक चार माह तक चलते हैं। इस अवधि में साधु-संत अपनी यात्राएं रोककर एक ही स्थान पर रहकर व्रत, ध्यान और तप करते हैं।

आषाढ़ मास में ही शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि के दिन उड़ीसा में जगन्नाथ रथ यात्रा होती है। इस दिन कृष्ण, सुभद्रा और बलराम की पुष्य नक्षत्र में रथ यात्रा निकाली जाती है। इस मास में ही मिथुन संक्रांति में प्रकृति के बदलाव पर रज पर्व बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। तीन दिनों तक चलने वाले इस पर्व में कृषि से जुड़े सभी काम जैसे- जुताई, बुवाई आदि पूरी तरह रोक दिए जाते हैं। यही नहीं सिलबट्टे का उपयोग भी नहीं किया जाता, क्योंकि उसे धरती का ही रूप माना जाता है। प्रसिद्ध शक्तिपीठ कामाख्या मंदिर में भी इसी मास में अंबुवाची मेला लगता है। इस मेले में अच्छे मानसून की कामना से धरती की पूजा की जाती है।

आषाढ़ मास को जीवन और प्रकृति की शुरूआत का मास माना जाता है। वर्षा ऋतु की शुरूआत इस मास से मानी जाती है। कृषि और किसान के लिए यह मास बहुत महत्वपूर्ण है। यह खरीफ फसलों की बुवाई का समय है। आषाढ़ मास की पूर्णिमा के दिन ही जीवन को सही राह दिखाने वाले गुरु को समर्पित गुरु पूर्णिमा या व्यास पूर्णिमा का पर्व भी मनाया जाता है। आषाढ़ माह में तंत्र और शक्ति उपासना के लिए गुप्त नवरात्र भी मनाए जाते हैं। इस मास में विष्णु के साथ ही जल देवता वरुण की उपासना का भी विशेष महत्व है। जीवन में ऊर्जा बनी रहे, इसलिए ऊर्जा के प्रतीक सूर्य और मंगल की उपासना का इस मास में विशेष महत्व है।

सामूहिक सहभागिता से मात्स्यिकी क्षेत्र बनेगा मजबूत - चिराग पासवान

पीएम-किसान सम्मान निधि की 23वीं किस्त जारी

मुंबई। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री चिराग पासवान ने कहा कि सामूहिक सहभागिता मात्स्यिकी क्षेत्र को सशक्त बनाने, नवाचार को बढ़ावा देने और ग्रामीण आजीविका को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाएगी। अंधेरी (पश्चिम) स्थित यारी रोड स्थित केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 23 वीं किस्त जारी होने पर आयोजित कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि मात्स्यिकी क्षेत्र के बढ़ते महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि यह क्षेत्र रोजगार सृजन, उद्यमिता विकास और आर्थिक वृद्धि की दृष्टि से अत्यंत संभावनाशील व तेजी से विकसित होने वाला क्षेत्र है। उन्होंने मत्स्य प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और विपणन प्रणालियों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि आधुनिक प्रसंस्करण तकनीक, कोल्ड-चेन विकास, बेहतर भंडारण, विकिरण तकनीक और उन्नत संरक्षण विधियां उत्पादों की शेल्फ लाइफ बढ़ाने, नुकसान कम करने और लाभप्रदता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। पासवान ने कहा कि इस क्षेत्र का ध्यान केवल उत्पादन मात्रा तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि मूल्य संवर्धन, गुणवत्ता, नवाचार और ब्रांडिंग की दिशा में भी आगे बढ़ना चाहिए। वैश्विक व्यापार चुनौतियों के बावजूद भारतीय मात्स्यिकी निर्यात के रिकॉर्ड प्रदर्शन का उल्लेख करते हुए उन्होंने संगठित और वैज्ञानिक उत्पादन प्रणालियों को और मजबूत करने का आान किया।

ग्रामीण विकास राज्य मंत्री कमलेश पासवान ने किसानों को सहायता प्रदान करने और ग्रामीण आजीविका को सुदृढ़ करने में पीएम-किसान योजना के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मात्स्यिकी के लिए अलग मंत्रालय का गठन इस बात को दर्शाता है कि प्रधानमंत्री की ओर से मछुआरों और मत्स्य किसानों को भी देश के अन्य किसानों के समान महत्वपूर्ण हितधारक के रूप में मान्यता दी गई है। उन्होंने किसानों की आय बढ़ाने के लिए विविध उत्पादन प्रणालियों और आजीविका अवसरों को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर भी बल दिया।

केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान में कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. एन. पी. साहू, संस्थान के निदेशक के स्वागत संबोधन से हुआ। डॉ. साहू ने अनुसंधान, शिक्षा, विस्तार और क्षमता निर्माण के माध्यम से मात्स्यिकी क्षेत्र को सशक्त बनाने में केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान की प्रमुख उपलब्धियों और योगदानों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मात्स्यिकी और जलीय कृषि भारत की विकास यात्रा के महत्वपूर्ण घटक हैं और केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान इस क्षेत्र के लिए गुणवत्तापूर्ण मानव संसाधन, वैज्ञानिक ज्ञान और तकनीकी सहयोग उपलब्ध कराने में निरंतर योगदान दे रहा है।

केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान मुंबई व इसके क्षेत्रीय केंद्रों कोलकाता, मोतीपुर, रोहतक, पवारखेड़ा, काकीनाडा और बालभद्रपुरम में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 23वीं किस्त जारी करने के राष्ट्रीय कार्यक्रम का सीधा प्रसारण आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान डिजिटल कृषि मिशन, प्राकृतिक खेती मिशन, राष्ट्रीय दलहन मिशन, पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना और प्रधानमंत्री मत्स्य किसान समृद्धि सह-योजना सहित विभिन्न प्रमुख सरकारी पहलों के बारे में भी जागरूकता उत्पन्न की गई। इन पहलों का उद्देश्य किसानों की आय में वृद्धि करना, सतत कृषि और जलीय कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना तथा डिजिटल और संस्थागत सहयोग तंत्र को मजबूत करना है।

भावी पीढ़ी को सोशल मीडिया से बचाने की जरुरत - सुधांशु त्रिवेदी

हेमा फाउंडेशन का 10 वां स्थापना दिवस समारोह

मुंबई। आर. आर. ग्लोबल की सामाजिक और परोपकारी इकाई हेमा फाउंडेशन की ओर से दादर (पूर्व) स्थित योगी सभागार में आयोजित हेमोत्सव 2026 समारोह में बीजेपी प्रवक्ता सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि इंटरनेट और सोशल मीडिया आपके माइंड में विकार उत्पन्न कर रही है, देखने में तो बहुत अच्छी लग रही हैं लेकिन यह खतरनाक है जिससे संभल कर चलने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया आपके माइंड को कैप्चर कर लिया है। अब आप उस स्क्रीन में जाके फंस गए, फिर आपके माइंड से जो करवाना हो वो करेंगे। इसलिए अच्छी तरह समझिए।

जैसे रामायण में कथा है कि जब रावण आया था माता सीता का हरण करने तो साधु के वेश में आया था। बहुत सी चीजें जो आज आपको इंटरनेट और सोशल मीडिया पर आपके माइंड में विकार उत्पन्न करने वाली हैं, देखने में तो बहुत अच्छी लग रही हैं, मगर हैं वो खतरनाक उससे बचने की जरूरत है। इस खतरे से बचने के लिए माता पिता से बात करिए। अपने टीचर से बात करिए। बिल्कुल किसी के बहकावे में मत आइए। सिर्फ इन तीन लोगों की बात सुनिए। बाकी कोई भी आपसे कह रहा है, तो वह आपके लिए बहकाने की बात कर सकता है।

त्रिवेदी ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में कई सारी चुनौतियां हैं। वैल्यू आपको सही दिशा में ले जाएगी, तमाम चुनौतियों से बचाएंगी और आपको जीवन में आने वाले बहुत से खतरों से भी बचाएंगी। दुनिया में अमेरिका सबसे उच्च शिक्षित देश है लेकिन सबसे ज्यादा फायरिंग की घटनाएं वही होती है। केवल शिक्षित होने से समाज नहीं बदलता है। शिक्षा के साथ नैतिक शिक्षा भी जरूरी है। हेमा फाउंडेशन के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि जिसे आज हम अमृत काल कहते हैं, भविष्य में यही बच्चे 2047 में जाकर किसी ना किसी महत्वपूर्ण स्थान पर जाकर कोई ना कोई महत्वपूर्ण रोल अदा कर रहे होंगे और तब तक भारत विकसित राष्ट्र बन जाएगा। हेमा फाउंडेशन के अध्यक्ष एवं प्रबंध न्यासी महेन्द्र काबरा ने हेमा फाउंडेशन की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नैतिक शिक्षा सरल और प्रभावशाली होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि हेम वर्चुअल ई-लर्निंग पोर्टल के माध्यम से यह अभियान देश के 26 राज्यों के 7,629 विद्यालयों, 15,574 शिक्षकों और करीब 4.94 लाख विद्यार्थियों तक पहुंच चुका है। इस अवसर पर आर आर ग्लोबल के संस्थापक रामेश्वर लाल काबरा, अनुसंधान प्रमुख व न्यासी डॉ. चीनू अग्रवाल, विधायक संजय उपाध्याय आदि उपस्थित थे।

विश्वकर्मा समिति ने मेधावी विद्यार्थियों का बढ़ाया हौसला

7.5 लाख रुपए की शिक्षा प्रोत्साहन राशि बांटी

मुंबई। विश्वकर्मा समिति मुंबई की ओर से आयोजित सर्व शिक्षा अभियान में समाज के कक्षा 10 और 12 वीं के विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। सांताक्रुज (पूर्व) कालीना स्थित श्री विश्वकर्मा समिति प्रांगण में आयोजित समारोह में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले कक्षा 10 वीं के प्रत्येक 25 विद्यार्थियों को 15 हजार रुपये और कक्षा 12 वीं के प्रत्येक 15 विद्यार्थियों को 20 हजार रुपये शिक्षा प्रोत्साहन राशि देकर सम्मानित किया गया। सर्व शिक्षा अभियान रजिस्ट्रेशन नहीं कराने वाले विद्यार्थियों को भी 1100 रुपये का सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री विश्वकर्मा मंदिर स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में भारी बरसात के बावजूद मेधावियों की भारी भीड़ रही।

इस अवसर पर विश्वकर्मा समिति के अध्यक्ष राजेंद्र विश्वकर्मा ने कहा कि प्रतिभाओं का सम्मान केवल उनकी उपलब्धियों का अभिनंदन नहीं, बल्कि समाज में शिक्षा और उत्कृष्टता की संस्कृति को प्रोत्साहित करने का माध्यम है। ऐसे आयोजन अन्य विद्यार्थियों को भी बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित करते हैं और समाज में सकारात्मक प्रतिस्पर्धा का वातावरण तैयार करते हैं।

चेयरमैन सुनील राणा ने विद्यार्थियों से शिक्षा को जीवन का सबसे बड़ा साधन बताते हुए निरंतर अध्ययन, अनुशासन और कठिन परिश्रम के साथ अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर रहने का आान किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है और शिक्षित, संस्कारित व जागरूक युवा ही विकसित भारत के सपने को साकार कर सकते हैं। महामंत्री एड. जे.पी. शर्मा ने कहा कि प्रतिभा सम्मान समारोह जैसे आयोजन समाज के लिए प्रेरणादायी हैं। उन्होंने समाज में आपसी एकता, सहयोग और सामूहिक आयोजनों को बढ़ावा देने पर भी बल दिया। पत्रकार हरिगोविंद विश्वकर्मा ने विद्यार्थियों से जीवन में बड़े लक्ष्य निर्धारित कर मेहनत, धैर्य और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने का आान किया। उन्होंने विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ स्वास्थ्य पर भी ध्यान देने, अभिभावकों को बच्चों के साथ नियमित संवाद बनाए रखने और मोबाइल के सीमित उपयोग की सलाह दी। विश्वकर्मा समिति की संपर्क टीम के सदस्य परविंद विश्वकर्मा ने कहा कि समिति का उद्देश्य समाज के विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के साथ-साथ उनमें आत्मविश्वास और प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करना है।

इनकी रही मौजूदगी –

समारोह में लालजी विश्वकर्मा, सर्वजीत विश्वकर्मा, मोतीलाल विश्वकर्मा, लल्लूराम विश्वकर्मा, सुभाष विश्वकर्मा, सचिन विश्वकर्मा, राजकुमार विश्वकर्मा, गणेश विश्वकर्मा, राजेश विश्वकर्मा, बृजेश विश्वकर्मा, संजय शर्मा, प्रेमचंद विश्वकर्मा, रामलाल विश्वकर्मा, रामशब्द शर्मा, चंद्रकेश विश्वकर्मा, नन्हेलाल विश्वकर्मा, अवधेश विश्वकर्मा, लल्लन विश्वकर्मा आदि सहित बड़ी संख्या में समाज के लोग उपस्थित रहे।

विश्वकर्मा लाइब्रेरी टीम ने किया चखड़ गांव का दौरा

जम्मू। विश्वकर्मा लाइब्रेरी रिसर्च सेंटर, न्यू प्लॉट जम्मू की एक टीम ने जम्मू जिले के चाखड़ गांव में जागरूकता शिविर का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य लोगों को अच्छी शिक्षा के प्रति जागरूक करना और उन्हें उच्च स्तर तक पहुंचने में मदद करना था। लगभग 20 परिवारों से संपर्क किया गया। यह गांव जम्मू शहर से लगभग 50 किलोमीटर दूर एक दूरस्थ पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है। इस गांव में लगभग 25 विश्वकर्मा परिवार रहते हैं।

लाइब्रेरी टीम ने वंचित छात्रों को नोटबुक, पत्रिकाएं और 2026 के कैलेंडर वितरित किए। शिविर में प्रेरक भाषण भी दिए गए। प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए शिक्षाविद बलवंत कटारिया ने कहा कि लाइब्रेरी का लक्ष्य पंक्ति में अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना है। उन्होंने कहा कि लाइब्रेरी ग्रामीण जनता के प्रति अपनी जिम्मेदारी के लिए प्रतिबद्ध है। छात्रों और अभिभावकों से बातचीत करते हुए, उन्होंने उन्हें आईटीआई और पॉलिटेक्निक जैसे तकनीकी पाठ्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया ताकि वे जल्द से जल्द आय का स्रोत प्राप्त कर सकें। उन्होंने बताया कि लाइब्रेरी ने जम्मू प्रांत के विभिन्न हिस्सों में 26000 पत्रिकाएँ, 7000 नोटबुक और 6000 कैलेंडर वितरित किए हैं और यह अभियान अभी भी जारी है। कटारिया ने कहा कि लाइब्रेरी छात्रों के कल्याण के लिए उनके घर-घर जाकर सेवा प्रदान करने के मिशन पर काम कर रही है। आर्थिक समस्या या अच्छी शिक्षा में बाधा डालने वाली अन्य समस्याओं के मामले में कोई भी छात्र पुस्तकालय टीम से संपर्क कर सकता है। उन्होंने जागरूक किया कि केवल शिक्षा ही शोषण, गरीबी और पिछड़ेपन से मुक्ति दिला सकती है।

इस अवसर पर पुस्तकालय के सचिव ओम कटारिया ने जागरूकता देते हुए कहा कि हमें अंधविश्वास में नहीं पड़ना चाहिए और नशे से दूर रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि केवल शिक्षा ही हमें सुखी और समृद्ध नागरिक बना सकती है। प्रीतम लाल वर्मा और जोगिंदर अंगोत्रा ने भी ग्रामीण छात्रों की समस्याओं को सुना। इस अवसर पर ज्ञानचंद पंच को उनके आजीवन सामाजिक कार्यों के लिए स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया। इसके अलावा अभिकाश दिसगोत्रा को 11वीं कक्षा में 80% अंक प्राप्त करने पर, अरुण वर्मा को 12वीं कक्षा में 75% अंक प्राप्त करने पर, अंश वर्मा को 10वीं कक्षा में 71% अंक प्राप्त करने पर और कोमल वर्मा को 10वीं कक्षा में 71% अंक प्राप्त करने पर ट्रॉफी भेंट कर सम्मानित किया गया। अतिथि दल से बातचीत करने वालों में सुप्रिया वर्मा, आरुष वर्मा, विकास वर्मा, स्मृति वर्मा, सुमित वर्मा और रीना देवी शामिल थे। आयोजन दल में सुनील वर्मा, सोम राज, ओम प्रकाश, सुरिंदर कुमार, जीवन वर्मा और अमित वर्मा शामिल थे।

सात समंदर पार भी गूंजने लगा सारंगी का स्वर

मुंबई। सारंगी को मानव स्वर के सबसे निकट माना जाता है जो भावनाओं, आध्यात्मिकता और कलात्मक गहराई को अभिव्यक्त करने की अद्वितीय क्षमता रखती है। जोगियों ने सारंगी के माध्यम से निर्गुण व बम लहरी को आमजन तक पहुंचाया। मुगल काल विशेषकर 17वीं सदी और मुहम्मद शाह रंगीले के शासनकाल में इसे शास्त्रीय संगीत और दरबारी गायन में मुख्य रूप से जगह मिली।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सारंगी सुल्तान के नाम से प्रसिद्ध उस्ताद कमाल साबरी इन दिनों पूरी दुनिया के संगीत प्रेमियों को सारंगी के स्वर से रूबरू करा रहे हैं। मुरादाबाद घराने की सातवीं पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में उन्होंने अपना जीवन भारत के सबसे भावपूर्ण और आत्मीय संगीत वाद्यों में से एक सारंगी के संरक्षण, प्रचार-प्रसार और नवाचार को समर्पित किया है। पद्म भूषण उस्ताद साबरी खान के पुत्र और शिष्य होने के नाते, उस्ताद कमाल साबरी ने एक समृद्ध संगीत विरासत में प्राप्त की, साथ ही एक कलाकार, संगीतकार, शिक्षक और सांस्कृतिक राजदूत के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान भी बनाई।

उनके प्रयासों ने सारंगी को पारंपरिक संगत वाद्य से आगे बढ़ाकर एक वैश्विक स्तर पर सम्मानित एकल वाद्य के रूप में स्थापित किया है, जो विभिन्न संस्कृतियों और संगीत परंपराओं के श्रोताओं को समान रूप से आकर्षित करता है। वे न्यूयॉर्क स्थित संस्थाओं जैसे ग्रीन फैड म्यूज़ियम और इंटरनेशनल म्यूजियम ऑफ द साड़ी के सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के लिए वैश्विक सांस्कृतिक राजदूत भी हैं।

मीरा रोड में सांस्कृतिक कार्यक्रम पुरवाई 2026 में उनके सारंगी प्रस्तुति को श्रोताओं ने खूब सराहा। उन्होंने दुनिया के कई प्रतिष्ठित सांस्कृतिक स्थलों, कॉन्सर्ट हॉलों और अंतरराष्ट्रीय संगीत महोत्सवों में प्रस्तुति देकर विविध पृष्ठभूमि के श्रोताओं को सारंगी की सुंदरता से परिचित कराया है। नवभारत से बातचीत में उन्होंने कहा कि ये प्रतिष्ठित प्रस्तुतियाँ सांस्कृतिक कूटनीति के सशक्त उदाहरण रही हैं, जहाँ संगीत राष्ट्रों और सभ्यताओं के बीच सेतु का कार्य करता है। सारंगी की कालातीत ध्वनि के माध्यम से उस्ताद कमाल साबरी ने भारत की समृद्ध कलात्मक विरासत को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया और विभिन्न देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत किया। कमाल साबरी ने एक शिक्षक, शोधकर्ता और अंतर-सांस्कृतिक संगीत संवाद के समर्थक के रूप में भी अंतरराष्ट्रीय पहचान प्राप्त की है। उन्होंने पारंपरिक संगीत के संरक्षण में शिक्षा की महत्ता को समझते हुए विश्वभर के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों और संगीत संस्थानों में कार्यशाला में, व्याख्यान-प्रदर्शन व शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित किए हैं।

सारंगी की सबसे बड़ी खासियत इसकी ध्वनि है, जो मानव कंठ के सबसे करीब मानी जाती है। इसकी बनावट लकड़ी के एक टुकड़े को तराश कर बनाई गई खोखली संरचना और बकरे के चमड़े की परत इसे मींड और गमक जैसे जटिल संगीत अलंकारों को उत्पन्न करने में सक्षम बनाती है। महाभारत और रामायण महाकाव्यों में गंधर्वों को देवताओं के दरबार में गायक के रूप में दर्शाया गया है। वे अपनी गायन क्षमता का उपयोग देवताओं और मनुष्यों के बीच संदेशवाहक के रूप में करते थे। भगवान ब्रह्मा ने देवताओं के दरबार से गंधर्वों को सारंगी वाद्य यंत्र प्रदान किया था, जिसे बाद में मानव जगत में लाया गया। पहले संचार के सीमित साधनों के कारण जोगी गाँव-गाँव घूम-घूम कर कहानी सुनाते थे और राजा की प्रशंसा से लेकर पौराणिक युद्धों की कहानियों और लोगों के रोजमर्रा के जीवन तक हर विषय पर गीत गाते थे। वे कथात्मक कहानियाँ, लोकगीत और धार्मिक भजन गाते थे और उन्हें यात्रा करने वाले संदेशवाहक के रूप में भी जाना जाता था। फिलहाल सारंगी एक बार फिर अपने मनमोहक स्वरों से दुनिया के संगीत प्रेमियों के दिलों की धड़कनों को बढ़ा दी है।

सफेद नहीं, अब खाएं लाल चावल

सफेद चावल की तुलना में लाल चावल सेहत के लिए कहीं अधिक फायदेमंद होता है। अपनी खास रंगत और सुगंध के लिए पहचाने जाने वाले इस अनाज में भरपूर पोषक तत्व होते हैं, जो शरीर को कई बीमारियों से बचाते हैं।

वजन घटाने में मददगार – लाल चावल में फाइबर की मात्रा अधिक और कैलोरी बेहद कम होती है। इसे खाने से पेट लंबे समय तक भरा रहता है, जिससे ओवरईटिंग से बचाव होता है।

दिल रखे सेहतमंद – खराब कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम कर अच्छे कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाता है। ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखकर दिल की बीमारियों का खतरा टालता है।

डायबिटीज में फायदेमंद – इसका ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता है। इसमें मौजूद तत्व इंसुलिन की प्रभावशीलता को बढ़ाकर ब्लड शुगर के स्तर को स्थिर रखते है, जिससे यह मधुमेह रोगियों के लिए एक सुरक्षित विकल्प है।

मजबूत पाचन तंत्र – फाइबर से भरपूर होने के कारण यह कब्ज और गैस जैसी पेट की समस्याओं से राहत देता है। यह आंतों के गुड बैक्टीरिया को बढ़ाकर पाचन क्रिया दुरुस्त करता है।

जामुन का स्वाद और सेहत

बरसात के मौसम में मिलने वाला जामुन स्वाद और सेहत का बेजोड़ संगम है। एंटीऑक्सीडेंट, फाइबर और आयरन से भरपूर यह फल ब्लड शुगर को नियंत्रित करने और इम्यूनिटी बढ़ाने में बेहद मददगार है। हालांकि, जामुन के पूर्ण फायदे तभी मिलते हैं जब इसे सही तरीके से खाया जाए। आयुर्वेद के अनुसार, जामुन खाने के तुरंत बाद कुछ चीजों का सेवन करने से गैस, अपच और पेट दर्द जैसी गंभीर समस्याएं हो सकती हैं।

जामुन खाने के बाद इन 3 गलतियों से बचें

ठंडा पानी न पिएं:

जामुन के तुरंत बाद ठंडा पानी पीने से पाचन धीमा हो जाता है। कम से कम 30 मिनट तक पानी न पिएं। प्यास लगने पर सिर्फ सामान्य पानी ही लें।

दूध और दही से दूरी:

जामुन के बाद दूध पीने से पेट फूलना और भारीपन होता है। दही के साथ इसका कॉम्बिनेशन एसिडिटी बढ़ाता है। दोनों के बीच 1 से 2 घंटे का अंतर रखें।

अचार और मसालेदार भोजन:

जामुन के बाद तीखा या अचार खाने से पेट में जलन, ऐंठन और मरोड़ हो सकती है। अचार के मसाले जामुन के गुणों को नष्ट कर देते हैं।

खाली पेट कभी न खाएं:

सुबह खाली पेट जामुन खाने से शरीर में एसिड तेजी से बढ़ता है। इससे सीने में जलन और पेट दर्द हो सकता है। जामुन खाने का सबसे सही समय दोपहर का भोजन करने के 1 घंटे बाद का है। इसे हमेशा कुछ खाने के बाद ही खाएं।

ब्लड शुगर नियंत्रण:

डायबिटीज में जामुन का फल ही नहीं, बल्कि उसकी गुठली भी डायबिटीज के मरीजों के लिए एक अचूक औषधि है। गुठली में जंबोलिन और जंबोसीन नामक तत्व होते हैं। यह शरीर में स्टार्च को शुगर में बदलने से रोकते हैं, जिससे अचानक शुगर नहीं बढ़ती। इसका नियमित सेवन शरीर में इंसुलिन के उत्पादन को बढ़ाने में मदद करता है। जामुन की गुठलियों को धोकर सुखा लें। सूखने के बाद इन्हें पीसकर बारीक पाउडर बना लें। रोज सुबह खाली पेट एक चम्मच पाउडर को गुनगुने पानी के साथ लें।

CUMI SINCE 1954
70 YEARS
CUMI
सैंडमास्टर के साथ बनें मास्टर।
हर बार पाएं फिनिश बेहतर।
SAND MASTER®
MADE IN INDIA
SAND MASTER
PREMIUM WOOD CUTTER
CUT & FIT
ANTI-STATIC
PAPER ROLL
Connect With Us Today
80351 20000
email@cumi.murugappa.com
Contact: Pawan Mishra
+91 85911 57851
For Enquiries,
Visit our Website